Vol 3 Issue 11 Dec 2013

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume-3, Issue-11, Dec-2013
ISSN 2230-7850

Available online at www.isrj.net

नागार्जुन के बहुचर्चित उपन्यास

fÁ;dk
fgUnh foHkkx] Tkhñ ,Ekñ ,Ukñ dkyt] vEckyk dV A

सारांश:नागार्जुन प्रतिष्ठित लेखक के रूप में जाने जाते रहे हैं। नागार्जुन जी ने बहुत तरह से साहित्य रचना की है। उन्होंने गद्य–पद्य दोनों क्षेत्रों में माहरत हासिल की है। जितनी पकड़ उनकी काव्य विधा में थी, उतनी ही पकड़ उनकी गद्य विधा में भी रखते थे। नागार्जुन उपन्यास साहित्य में बारह बहुचर्चित उपन्यास लिखे। उनके बारह उपन्यासों में–'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा', 'नई पौध', 'जमनिया का बाबा', 'हीरक जयन्ती', 'वरूण के बेटे', 'दुखमोचन', 'उग्रतारा', 'कुंभीपाक', 'बाबा बटेसरनाथ', 'पारो', 'गरीबदास' आदि हैं।

प्रस्तावना :-

कहा जाता है कि उपन्यास लिखने की पहली प्रेरणा नागार्जुन को राहुल साकृत्यायन द्वारा दी गई डिक्टेशन से ही मिली। नागार्जुन अमबारी में किसान आन्दोलन का नेतृत्व करने के कारण गिरफ्तार कर छपरा जेल में रखे गए थे। उस समय राहुल जी भी उस जेल में थे। इस जेल यात्रा में राहुलजी ने अपना उपन्यास 'जीने के लिए' नागार्जुन को डिक्टेशन देकर लिखवाना शुरू किया। नागार्जुन की यह पहली जेल यात्रा थी। राहुल उस समय तक कई बार जेल जा चुके थे। जेल में वे अपने समय का उपयोग साहित्य रचना के लिए किया करते। नागार्जुन के बहुचर्चित बारह उपन्यास का कथाविन्यास इस प्रकार से है–

रतिनाथ की चाची

हिन्दी साहित्य का बहुचर्चित उपन्यास रहा है। यह 1948 ई0 में इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ था। यह उपन्यास नारी की दशा तथा उसके दुखों की कहानी दर्शाता है। इस उपन्यास की मुख्य पात्रा जिसे रतिनाथ की चाची कहा जाता है उसका नाम गौरी है। रतिनाथ की चाची एक विधवा नारी है जिसके साथ समाज अन्याय का पहाड़ ढाह देता है। उपन्यास में रतिनाथ की चाची आजीवन दुखी रहती है और दुख के साथ ही उसकी मृत्यु होती है। उपन्यास का दूसरा पात्र बालक रतिनाथ होता है जो कथाक्रम को आगे बढ़ाता है। क्योंकि उसी पात्र की चाची ही इस उपन्यास की मुख्य पात्रा है। रतिनाथ का चाची के लिए उसकी मां–बाप सब कुछ होती है और चाची का भी रति के अलावा कोई दूसरा सहारा नहीं होता।

चाची के पति की मृत्यु हो गई होती है और एक दिन अंधेरी रात में रतिनाथ का पिता जयनाथ उसकी आबरू लूट लेता है जो उसका देवर होता है और अब वह उसके बच्चे की मां बनने वाली होती है जो कि एक विधवा के लिए भारी कलंक था। समाज उस पर उंगलियां उठाता है। गांव की औरतें उसका जीना दूभर कर देती हैं। चाची सारे समाज से बच–बचाकर अपनी मां के यहां जाकर अपना पेट गिरा देती है लेकिन फिर भी समाज उसे जीने नहीं देता। पड़ोस की औरतें उसके बेटे को भड़का देती हैं और वह उसे मारता–पीटता है। अंत में भी उसका बेटा उसका चेहरा देखने तक नहीं आता। रतिनाथ ही उसका दाह–संस्कार करता है।

बलचनमा

'बलचनमा''नागार्जुन का दूसरा चर्चित उपन्यास है। यह उपन्यास इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ था। उपन्यास का नायक बलचनमा है। यह ग्रामीण समाज की दर्दनाक कथा है जिन पर उच्चवर्ग के कहर ढाता है। उपन्यास में उच्च वर्ग तथा निम्न वर्ग का सघर्ष दिखाया गया है। उपन्यास में उच्च वर्ग किस प्रकार निम्न वर्ग की बहु–बेटियों की इज्जत लूट लेते थे बताया गया है।निम्न वर्ग की जमीनें भी लूट ली जाती थीं। बलचनमा एक गरीब खेतिहार का बेटा है। उसके पिता को आम तोड़ने के गुनाह में ठाकुर पीट–पीटकर मार डालते हैं। जब वह केवल नौ–दस साल का होता है। उसे उन्हीं ठाकुरों के यहां भैंस चराने की नौकरी करनी पड़ती है। मलिकाइन उसे गालियां निकालती है और जुठा खाना खिलाती है। उसके उपर चोरी का इल्जाम लगता है। वह वहां से भागकर फूल बाबू के यहां चला जाता है जहां वह स्वराज की लड़ाई में शामिल हो जाता है। आखिर में बलचनमा ठाकुरों के अत्याचारों के विरूद्ध आवाज उठाता है। बलचनमा एक होनहार, परिश्रमी, सुदृढ विचारों वाला, क्रान्तिकारी युवक है।

नई पौध

नई पौध' नागार्जुन का तीसरा उपन्यास है। यह उपन्यास इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।यह विवाह समस्या पर आधारित उपन्यास है। इसमें बहु–विवाह, बाल–विवाह, तथा नई पीढ़ी तथा पुरानी पीढ़ियों के बीच संघर्ष दिखाया गया है। 15 साल की युवती विश्वेसवरी इस उपन्यास की मुख्य नायिका है। उपन्यास का सारा कथानक उसी के इर्द–गीर्द घूमता है। उसका नाना खोंखा पंडित उसके लिए एक 50 वर्ष का वर ढूंढकर लाते हैं जो अमीर व्यक्ति होता हैं, को बेचना चाहते हैं। गांव के युवा तथा विश्वेसरी का एक मामा उसके पक्ष में खड़े हो जाते हैं तथा उसकी शादी एक पढ़े–लिखे युवक से कर देते है।

बाबा बटेसरनाथ

नागार्जुन का 'बाबा बटेसरनाथ' नामक उपन्यास दिल्ली से प्रकाशित हुआ। 'बाबा बटेसरनाथ'एक आंचलिक उपन्यास है। उपन्यास के माध्यम से 'नागार्जुन ने दरभगा जिले के रूपउली गांव का चित्रण किया है। उपन्यास में बाबा बटेसनाथ एक विशाल वट वृक्ष के रूप में जैकिशुन को उसके दादा परदादा की कहानी तथा गांव में पड़े अकाल के बारे में सुनाता है। उपन्यास में जैकिसुन तथा बाबा बटेसरनाथ दो मुख्य पात्र हैं तथा उन्हीं के माध्यम सारा कथानक प्रस्तुत हुआ है। उपन्यास में गांव के उच्चवर्ग अत्याचारों तथा राजनीतिक दांवपेचों तथा प्रशासन की अव्यवस्था का ढिढोरा पीटा गया है। बरगद का यह पेड़ जिसे बाबा बटेसरनाथ कहा है वह सौ वर्ष से उपर की बात उपन्यास के माध्यम से सुनाता है।

बरुण के बेटे

नागार्जुन का उपन्यास 'वरुण के बेटे' भी एक चर्चित उपन्यास रहा है। उपन्यास गरीब मछुयारा वर्ग पर आधारित है जिनकी आजीविका मछली पकड़ने और बेचने पर आधारित है। तालाबों और पोखरों से मछली पकड़कर बेचते थे तथा अपना पेट पालते थे। उच्च वर्ग के लोग उनका निवाला छीनने की कोशिश करते हैं जिसमें मधुरी तथा उसका पिता खुरखुन ही इस उपन्यास के मुख्य पात्र हैं। दोनों बड़ी बहादुरी से शोषकों का मुकाबला करते हैं उन्हें चुनौती देते हैं। मधुरी गांव की ही मछुयारा वर्ग की लड़की है जो उच्चवर्ग के प्रति आन्दोलन करती है। मधुरी समझदार लड़की होने के साथ–साथ बहादुर भी है। मधुरी गांव की कमेटी के साथ मिलकर पुलिस के खिलाफ नारेबाजी करती हुई कहती है।

पारो

'पारो' उपन्यास सन 1975 ई0 में प्रकाशित होकर आया। नागार्जुन ने इस उपन्यास के माध्यम से अनमेल विवाह समस्या को उठाया है। इसमें पारो नामक नायिका को साठ वर्षीय पुरूष से शादी करनी पड़ती है और इसका अंत पारो की मृत्यु के साथ ही होता है। पारो एक बहुत ही सुन्दर और समझदार लड़की है जिसे पचास वर्षीय बूढ़े ठाकुर से शादी करनी पड़ती है। वह अपने मसेर भाई बिरजू जैसा पति चाहती थी लेकिन ऐसा नहीं होता। 'उसकी उम्र यही पांच छः वर्ष की थी। देखने सुनने में तो थी काली कलूटी, मगर बहुत ही समझदार बूझवाली थी। पारो अपने भाग्य पर रोती हुई कहती है, 'हे भगवान्! लाख दंड दे, मगर फिर औरत बनाकर इस देश में जन्म नहीं दें–छीँआ। पैंतालीस वर्ष का नरपिशाच एक अबोध लड़की के सामने दस रूपयों के नोटों का ढेर इसलिए लगावे कि...... ....।''

दुखमोचन

नागार्जुन का यह उपन्यास दिल्ली से प्रकाशित हुआ था। दुखमोचन' उपन्यास में नागार्जुन ने एक नौजवान दुखमोचन का वर्णन किया है जो अपने गांवों की भलाई के लिए अपनी नौकरी छोड़कर गांववालों की मदद करता है। वह उपन्यास का नायक है। गांव के कुछ उच्चवर्ग के लोगों द्वारा निम्न वर्ग के हिस्से का भी डकार जाना दर्शाया गया है। गांव में भयानक आग से सबके घर जल जाते हैं, ऐसी दशा में सब बेघर हो जाते हैं लेकिन दुखमोचन सरकार से तथा दूसरे गांव से मदद लेकर उन लोगों के लिए घर तथा खाने के लिए रोटी का इन्तजाम करता है। सरकार से गांववालों के लिए अनाज मंगवाता है और उस अनाज को गांववालों में बांटता हुआ कहता है। वह एक साहसी, कर्मठ, मेहनती, सच्चा इन्सान जो गांव को एकसूत्र में पिरोना चाहता है तथा दकियानुसी लोगों को सबक सिखा देता है।

कुंभीपाक

नागार्जुन का 'कुंभीपाक' उपन्यास सन् 1960 ई. में प्रकाशित हुआ। उपन्यास में वेश्यवृति को दर्शाया गया है तथा जिस्मफरोशी के दलदल में फंसी औरतों की कहानी है। भुवन, कांता तथा कपांउडर की बीबी निर्मला इस उपन्यास की पात्र हैं जिनमें निर्मला मुख्य पात्र है। उसी की माध्यम से घटनाक्रम आगे बढ़ता है। भुवन और उसकी बुआ बी.एन शर्मा के चंगुल में फंसकर आजीवन कष्ठ झेलती हैं, जो औरतों को दलाल था। भुवन को तो कम्पोडर की बीबी इस दलदल से निकाल लेती है लेकिन उसकी बुआ बड़ी मुश्किल से निकलती है। कम्पोडर की बीबी बड़ी साहसी, सह्रदयी, भावुक तथा सच्ची औरत के रूप में दिखाई गई है।

हीरक जयन्ती

नागार्जुन का उपन्यास सन '1962 में प्रकाशित हुआ। बाबू नरपत सिंह के लिए अभिनंदन ग्रंथ समारोह का आयोजन करने को लेकर यह उपन्यास लिखा गया है। बाबू नरपत सिंह राजनीतिज्ञ के रू़प में उपन्यास में दर्शाये गए हैं यह अभिनंदन गंथ उन्हीं को ग्रंथ भेंट करना था जिसका असली मकसद पैसा इक्ट्ठा करना था जिसमें लेखक तथा समाज के कुछ उच्च वर्ग के लोग शामिल हैं। उन्हें समाज, लोग, परिवार से कुछ लेना–देना नहीं है। उपन्यास में राजनीतिज्ञों, कवियों, बड़े साहूकारों, मिल मालिकों, तथा भ्रष्ट प्रशासन को कच्चा चिट्ठा खोला गया है जो कि झूठी शान के लिए कुछ भी करने से नहीं चूकते। इसमें मंजूमुखी नायिका के रूप में चरितार्थ है।

उग्रतारा

'उग्रतारा' उपन्यास नागार्जुन का नारी समस्या तथा विवाह समस्या पर आधारित उपन्यास है। इस उपन्यास में अन्तर्जातीय विवाह को चित्रित किया गया है। नारी की विवशता का चित्रण उपन्यास में देखने को मिलता है। उपन्यास में प्रेम विवाह की चर्चा भी की गई है। इस उपन्यास का कथानक डिस्ट्रिक्ट जेल रतनपुर में सिपाहियों के निवास स्थान तथा जेल के चारों और घूमता हैं। इस उपन्यास के मुख्य पात्र है उगनी और कामेश्वर जो दोनों एक दूसरे प्रेम करते हैं और भाग कर शादी करना चाहते हैं लेकिन पुलिस उन्हें पकड़कर जेल में डाल देती है। वहीं से शुरू होती है उनके दुखों की कथा। उगनी एक बहादुर और सुन्दर लड़की है। उगनी कामेश्वर का चित्रण करती हुई कहती है, 'मैंने अपना सबकुछ जिसे सौंप दिया था, उसी के साथ गांव से निकली थी वही आपके क्वार्टर से निकाल लाया है। उस आदमी का दिल बहुत बड़ा है। पराए गर्भ को ढोनेवाली अपनी प्रेमिका को फिर से बिना किसी हिचक के, उसने स्वीकार कर लिया। उसने मुझसे शादी कर ली है।' उपन्यास में प्रेम को उच्च सीन दिया गया है। किसी भी परिस्थिति पर उगनी और कामेश्वर का प्रेम नहीं घटता।

जमनिया का बाबा

नागार्जुन ने अपने इस उपन्यास में ढोंगी, साधुओं तथा बाबाओं के आडम्बरों का कच्चा चिट्ठा खोला है। बाबाओं के प्रति लोगों का अंधविश्वास का चित्रण है। उपन्यास में बताया गया है कि किस कारण जमनिया का बाबा साधू वेश को अपनाता है। जमनिया का बाबा तीन दोस्तों में से वह साधू होता है जिसे उनकी प्रेमिका के कत्ल के इल्जाम में पुलिस को उसकी छानबीन होती है और वह भागकर साधु बन जाता है। उपन्यास में मुख्य पात्र मस्तराम है। वह बाबा का चेला होता है। लोगों को बाबा का परसाद बांटते हुए वह बेंत छुआता था, लेकिन भांग के नशे में वह एक साधू की पिटाई कर देता है जिसके जुर्म में उन्हें जेल हो जाती है। लोगों पर टोटके करते रहते थे और अपने आश्रम में कई गुनाह करते हैं। इस तरह नागार्जुन ने इस उपन्यास में आई नारी पात्र को भी वखुबी चित्रण किया है जो इन बाबाओं के साथ भोग वासनाओं में संलिप्त रहती हैं। साधुनी का वेश धारण करने पर भी वे अपने आपको वासना से अलग नहीं कर पातीं। उपन्यास में नारी शोषण चित्रित किया गया हैं।

गरीबदास

गरीबदास उपन्यास नागार्जुन का अन्तिम ही उपन्यास है। इसके बाद जो उन्यास उन्होंने लिखा वह अधूरा ही रहा।यह दलित चेतना पर आधारित उपन्यास है। उच्च वर्ग तथा निम्न वर्ग के बीच के संघर्ष की कहानी उपन्यास के कथाक्रम को आगे बढ़ाते है। उपन्यास में कई पात्र हैं लेकिन हरिजानंद इस उपन्यास का मुख्य नायक पात्र है जो गरीबों तथा दलितों के लिए सोचता है उनके लिए कार्य करता है। गरीब तथा दलित बच्चों के लिए अलग स्कूल बनाता है क्योंकि उच्चवर्ग के बच्चों के डर के कारण दलित बच्चे स्कूल नहीं जाते थे। डाकुओं का वर्णन उपन्यास में किया गया है। उनके पकड़े जाने की घटना उपन्यास में चित्रित है। उच्चवर्ग तथा निम्नवर्ग के बीच की खींचतान और व्यथा को उपन्यास में दर्शाया गया है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि नागार्जुन के उपन्यासों के पात्र बड़े ही समझदार, जुझारू, साहसी, क्रान्तिकारी, सहृदयी, दयालू, निडर, मेहनती, परोपकारी आदि गुणों से परिपूर्ण हैं। उन्होंने पात्रों के सृजन में बड़ी सूझ–बूझ से काम लिया है। उनकी वेशभूषा, बोलचाल तथा परिवेश का पूरा ध्यान रखा है। नागार्जुन के पात्र बड़े ही स्वाभाविक लगते हैं। पात्रों के चरित्र चित्रण में नागार्जुन की पकड़ का लेखक कोई अन्य नहीं। उनके पात्र समाज के निम्न वर्ग से अधिक संबंधित हैं। उनके पात्र चरित्र–चित्रण आनोखा है।

संदर्भ संकेत :

1.शोभाकांत (स0), (दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2003)
2.नागार्जुन रचनावली – 4 – उपन्यास
3.नागार्जुन रचनावली – 5 – उपन्यास
4.विजयबहादुर सिंह, नागार्जुन और उनका रचना संसार (हापुड़, संभावना प्रकाशन, 1982) पृ. 14
5.प्रणय, नागार्जुन की सामाजिक चेतना (दिल्ली, यात्री प्रकाशन, 1995) पृ. 10
6.तेज सिंह, नागार्जुन का कथा–साहित्य (दिल्ली, पराग प्रकाशन, 1993) पृ. 15
7.प्रेमलता दुआ, समाजवादी यथार्थवाद और नागार्जुन का काव्य (दिल्ली, यात्री प्रकाशन, 1997) पृ.
8.सत्यानारायण, नागार्जुन कवि : और कथाकार (जयपुर, रचना प्रकाशन, 1990) पृ. 14

1.शोभाकांत (स.), नागार्जुन रचनावली –5 (नयी दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2003) पृ. 370

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net